गोपियों ने कहा 'ओ! कृष्ण ओ!प्रियतम! आपके आने के कारण ब्रज का महत्व वैकुंठ (भगवान विष्णु का दिव्य निवास) से भी अधिक हो गया है। यहां तक कि देवी लक्ष्मी भी ब्रज में प्रवेश चाहती है। लेकिन हम गोपियों की स्थिति देखें जो आपको अपने प्राण से अधिक प्यार करती है! आपके विरह में हम जंगल में हर जगह आपको ढूंढ रही हैं! आपके कमलदल के समान आंखों ने हमको घायल कर दिया है जैसे व्याध के तीर से हिरनी घायल हो जाती हैं। क्या कोई केवल हथियार से मारता है? आँखों से नहीं? आपने हमें कई राक्षसों से बचाया है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हम जानते हैं कि आप सिर्फ यशोदा के पुत्र नहीं हैं बल्कि आप वही हैं जो सबके हृदय में रहते हैं और आप पृथ्वी की रक्षा के लिए यहां आये हैं। फिर आप हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे है? आप अपने भक्तों की सभी इच्छाएँ पूरी करते हैं, तो आप अपनी मनभावन छबि को क्यों नहीं प्रकट करते हैं? आप हमें अपना दर्शन क्यों नही देते हैं? हम आपके लिए समर्पित हैं और आपके बिना नहीं रह सकती! हम अपने आप को आप पर न्यौछावर किया हैं। आप हमारे एकमात्र स्वामी हैं! विरह के इस दावानल को केवल आपके प्यारे मुखकमल के दर्शन से ही बुझाया जा सकता है! आपके मृदु और मीठे बोल सबको आपकी ओर आकर्षित कर लेते है!

आपके दिव्य लीलाओं की कहानियां वास्तविक जीवन अमृत हैं! ये लीला गुण नामावली सुनने वालों के पापों को भस्म कर देती है और यातनामय तप्त जीवन से छुटकारा देकर शीतलता प्रदान करती हैं। निश्चित रूप से जो इन लीला कथामृत को वितरीत करता है वह इस दुनिया का सबसे बड़ा दानी है!

ओ! प्यारे प्रियतम! वे दिन थे जब आपकी नज़र, आपके इशारे हमें अपरिमित खुशी का एहसास दिलाते थे! और अब आप हमारे व्याकुल विनतियों की ओर ध्यान नहीं दे रहे हो! हमें याद है

जब आप नंगे पाँव गायों को चराने के लिए जंगल में जाया करते थे, तो हम हमेशा सोचती थी कि इतने बडे जंगल में भरे पत्थर और काँटे आपके कोमल चरणों में चूभते होंगे तो आपको कितनी वेदना होती होगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आपकी अनुपस्थिति में एक पल हमारे लिए युग की तरह लगता था। और जब आप शाम को वापस आते थे तो आपको फिर से देखकर हमें बहुत ही खुशी होती थी। उस अवसर पर आपके दर्शन में पलक गिरने के कारण आनेवाली बाधा भी हमारे लिए असह्य होती थी! हम कहती थे कि ब्रह्मा कितना मूर्ख है जिसने इन पलकों को बनाया है!